'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ६९ } वाराणसी, गुरुवार ११ जून, १९५९ { पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

लखनपुर (कश्मीर) २२-५-'५९

दरिद्रनारायण की उपासना ही मेरे जीवन का अन्तिम और एकमात्र मिशन है

आज इस राज्य में मेरा यह पहला दिन है। मैं यहाँ कुछ देख रहा हूँ और कुछ सुन रहा हूँ। इस समय मेरी वही हालत है, जो पहले दिन स्कूल में दाखिल होनेवाले लड़के की होती है। लड़का स्कूल में सारी चीजें आँखों से देखता है, कानों से सुनता है, पर कुछ भी सोच नहीं सकता। फिर धीरे-धीरे उसका परिचय स्कूल के साथ होता है। उसी तरह आज हमने भी सारे दिन देखा-सुना।

आज यहाँ दिनभर जो चहल-पहल रही, उससे हमें बिहार का स्मरण हो आया। जो उत्साह और स्नेह बिहार की जनता में था, वही उत्साह और स्नेह यहाँ भी दिखायी पड़ता है। कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक सारे देश में एक ही सभ्यता, एक ही संस्कार और एक ही जैसे खयालात काम करते हैं।

एक ओर गाँव, दूसरी ओर विश्व

यह विज्ञान का जमाना है। इस जमाने की यह ख्वाहिश है कि सारे इन्सान एक होकर रहें। इस समय जो अलग-अलग राष्ट्र और अलग-अलग कौमें बनी हैं, वे टिक नहीं सकेंगी। विज्ञान के जमाने में एक बाजू गाँव रहेगा और दूसरी बाजू रहेगा विश्व। इस बीच जो कड़ियाँ होंगी, वे सभी को जोड़नेवाली होंगी। सारी सत्ता गाँववालों के हाथ में होगी। गाँव एक छोटी-सी आबादी होगा, जहाँ सभी लोग मिल-जुलकर रहेंगे, सह जीवन जीयेंगे। कुल दुनिया की एक सरकार रहेगी। उसमें ऐसे लोग रहेंगे, जिनके पास अखलाकी ताकत और नैतिक ताकत सबसे ज्यादा होगी। वे सारी दुनिया पर शासन नहीं करेंगे, परन्तु जब कभी जिस किसी को जरूरत होगी, उसे सलाह देंगे। इसका आरम्भ हम गाँव-गाँव को एक समाज बनाकर कर सकते हैं।

जनता के बल पर ही सरकार चलेगी

आज हर बात सोचने का जिम्मा बख्शी साहब पर डाला गया है। लेकिन मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि जब सारी बातें ये ही करेंगे तो फिर जनता क्या करेगी? लोग केवल या तो बख्शी साहब की निन्दा करते हैं या स्तुति करते हैं। क्या यह तरीका ठीक है? इस तरह से जीवन नहीं चल सकता। इसलिए हर गाँव को अपने पाँवों पर खड़ा होना चाहिए और अपनी जिम्मेवारी आप उठानी चाहिए। स्टेट पर कम से कम जिम्मेवारी होनी चाहिए। विज्ञान के जमाने में स्टेट पर जितना कम भार होगा, उतनी चीज माकूल होगी।

यहाँ कुछ लोग ऐसे हैं, जिनसे जमीन ली गयी है और कुछ लोग ऐसे हैं, जिनको जमीन की जरूरत है। उन लोगों ने आज अपनी-अपनी समस्याएँ हमारे सामने रखीं। उनके सवाल याने सारी जमात के सवाल हैं। उन सारे सवालों को हल करना किसी भी सरकार के लिए संभव नहीं है। गाँव-गाँव के लोग अपना जिम्मा आप उठायें तो कोई भी सरकार उसमें मदद कर सकती है। इसलिए लोगों को अपनी शक्ति का भान होना चाहिए।

सीलिंग के बाद भी दान

गाँव में आदमी रहता है और जंगल में जानवर उन दोनों में क्या फर्क है? यही कि इन्सान एक-दूसरे के लिए हमदर्दी दिखा सकता है, जानवर अपने दुःख से दुःखी होता है और अपने ही सुख से सुखी होता है। इन्सान दूसरों के दुःख में भी दुःखी होना जानता है। जहाँ दूसरे के लिए हमदर्दी हो, वहीं लोग अपने गाँव का कारोबार स्वयं चला सकेंगे और उसमें सरकार की मदद भी ले सकेंगे।

आज यहाँ हमें चार भूदान-पत्र मिले थे। यहाँ जमीन पर सीलिंग है। इसके बावजूद यहाँ के लोगों ने, जिनके पास मर्यादा से भी कम जमीन है, हमें दान दिया। इससे मुझे बहुत खुशी हुई। भगवान ने हमें संपत्ति, श्रमशक्ति, जमीन आदि जो कुछ दिया है, उसका एक हिस्सा समाज को देना चाहिए।

सोचना : सारे गाँव के लिए

जैसे हवा, पानी, सबके लिए हैं, वैसे ही जमीन सबके लिए है, ऐसा समझकर गाँव के लोग सारी जमीन को गाँव की बना दें तो गाँव में सरकारी दखल नहीं होगा। फिर तो सरकार की मदद ही मिलेगी।

कानून से सभी को लाभ नहीं हो सकता। कानून की मंशा सभी को इन्साफ देने की हो, तब भी वह सभी को नहीं मिल सकता, अतः इन्साफ के लिए गाँव को एक परिवार बनाना जरूरी है।

गाँव में एक शख्स दुःखी है, उसे आप मदद देने के लिए कुछ दान देते हैं तो क्या कोई आपको रोक सकता है? आज आपके पास कानून से २२ एकड़ जमीन रह गयी है। उसमें से आप स्वेच्छापूर्वक दान करते हैं तो आपको कानून नहीं रोक सकता। उससे एक-दूसरे के लिए जो हमदर्दी जाहिर होती है, वही सारे गाँव को एक बनाने में कामयाबी दिला सकती है।

मैं आपके घर आऊँगा

मैं यहाँ कुछ देखना चाहता हूँ, इसलिए मैं गाँव-गाँव में पहुँचकर आपके घरों में आऊँगा। लोग नाहक मेरे दर्शन के लिए आये। मैं ही आपके दर्शन के लिए आऊँगा, आपकी बातें सुनूँगा और चाहूँगा कि मेरे द्वारा आपके गाँव का कुछ काम बने।

तेलंगाना में मैं घर-घर जाता था। लोगों की बातें सुनता था। उनकी समस्याओं का अध्ययन करता था और जनशक्ति तथा सरकारी अफसरों की मदद से उन समस्याओं को सुलझाता भी था। इसी तरह मैं यहाँ भी लोगों की समस्याएँ सुलझाऊँगा और हर गाँव में देखूँगा कि मेरे द्वारा उस गाँव का कुछ काम बना या नहीं, गाँववालों का दुःख घटा या नहीं?

गाँव की प्राथमिकता

मैं दुनिया भर के मसलों को महत्त्व देने के बजाय गाँव के मसलों को अधिक महत्त्व देता हूँ। बाबा आपके गाँव में आया है तो आपको भी सोचना चाहिए कि क्या आपने भूदान, संपत्तिदान देने का निश्चय किया है? आप में से कोई शान्ति-सैनिक निकला है? गाँववालों ने गाँव की भलाई के लिए कोई संकल्प किया है? दर्शनों से भी कुछ लाभ होता है। लेकिन उससे पूरा लाभ नहीं होता। मैं चाहता हूँ कि मेरे आने से गाँव का कोई न कोई काम बने। अगर कोई काम नहीं बनता है तो मुझे खाना अच्छा नहीं लगेगा।

मैं बड़ी फज्र में थोड़ा सा खा लेता हूँ। ९-१० मील चलने के लिए उससे सम्बल मिल जाता है। लेकिन कश्मीर में प्रवेश हो रहा था, इसलिए आज मैंने एक समय का नाश्ता छोड़ दिया। मेरा पेट ऐसा है कि एक समय खाना छोड़ देने से दूसरी बार मैं भरपेट नहीं खा सकता हूँ और न दुगुना ही खा सकता हूँ। फिर भी मैंने आज एक बार का खाना इसलिए छोड़ दिया, ताकि कुछ शुद्धि हो जाय, जिससे गरीबों की सेवा हो सके। गरीबों को खाना नहीं मिलता और मुझे कश्मीर का फल, मेवा तथा शहद आदि मिलता है तो क्या वह मैं खा सकूँगा? क्या मुझे वह सब अच्छा लगेगा? नहीं! मुझे सारी चीजें तब अच्छी लगेंगी, जब यहाँ के समस्त गरीबों को भी वे उपलब्ध होंगी।

स्टेट का भला बख्शी साहब सोचेंगे, देश का भला पंडित नेहरू सोचेंगे और दुनिया का भला मालूम नहीं कौन सोचेगा? अल्लामियाँ तो है ही। मेरे सामने गाँव है और मैं गाँव ही का भला सोचता हूँ। गाँव के गरीबों की सेवा करना ही मेरे जीवन का अन्तिम और एकमात्र उद्देश्य है।

नगद धर्म या उधार धर्म?

स्वामी रामतीर्थ 'नगद धर्म' की बात करते थे। जिन्दगी में जो कुछ करना हो, वह तत्काल करना, इसीको 'नगद धर्म' कहते हैं। मरने के बाद की सोचना 'उधार धर्म' है। तुलसीदास जी ने कहा है: किसे मालूम है कि कौन 'जमपुर' जायेगा और कौन 'परमधाम' जायेगा? कौन 'दोज़ख' में जायेगा और कौन 'बरज़ख' में जायेगा, यह कोई नहीं जान सकता। इसलिए आज हम जिस गाँव में हैं, उसी गाँव का कुछ काम बने, यही हमारी अभिलाषा है।

जम्मू-कश्मीर में मेरी यात्रा चार-छह महीनों तक चलेगी। उससे इस स्टेट का, हिन्दुस्तान का और दुनिया का कितना लाभ होगा, यह तो पता नहीं, लेकिन मैं जिस गाँव में जाऊँगा, वहाँ मेरे द्वारा कुछ लाभ होना चाहिए।

रा भविष्य

हमारी कश्मीर-यात्रा की ओर सभी का ध्यान है। लोग सोच रहे हैं कि देखें, अब बाबा यहाँ से किधर जाता है? कश्मीर से एक रास्ता तिब्बत की ओर जाता है, दूसरा रूस की ओर, तीसरा पाकिस्तान की ओर तथा चौथा पञ्जाब की ओर जाता है। इन चारों रास्तों के अलावा एक रास्ता और भी है, जो सीधा ऊपर (आस्मान) की ओर जाता है। ऊपर जाने के लिए तो कहीं से भी रास्ता मिल सकता है। इसलिए बाबा का आज का यह पड़ाव आखिरी पड़ाव नहीं है, ऐसा कोई नहीं कह सकता।

आजकल भारतीय मानव की औसत आयु २७ वर्ष की है। मैं ६४ साल पार कर चुका हूँ। २७ से दुगुना भी जीऊँ तो वह ५४ वर्ष होता है। मैं तो उससे भी आगे दस वर्ष बढ़ चुका हूँ। इसलिए मुझे अब यहाँ से बिदा होने के लिए पासपोर्ट मिल चुका है। मैं किसी भी समय कूच कर सकता हूँ। इस समय मुझे मरने का पूरा हक है। उस हक को मैं अदा न करूँ तो दूसरी बात है। इसलिए हमारी तीन महीने की इस कश्मीर-यात्रा में क्या काम हो सकेगा, यह तो नहीं बता सकता, लेकिन इतना जरूर है कि मैं देशसेवा करते-करते जाना चाहता हूँ और साथ ही आज की बात आज ही करना चाहता हूँ।

सेवा: गरीब की या मेरी?

मेरा रोज खाना-पीना चलता है। लोग मेरी सेवा करते हैं। इसलिए सवाल यह है कि मैं सेवा ज्यादा करता हूँ या सेवा ज्यादा लेता हूँ? लोग मेरी बहुत चिंता करते हैं। मुझे दूध, शहद आदि देते हैं। अच्छे से अच्छा मकान भी रहने के लिए देते हैं। जब मैं इतनी सेवा लेता हूँ तो वापस इस गाँव की सेवा भी करना चाहता हूँ। इसलिए मैंने तय किया है कि कल से मैं गाँव के हर घर में जाऊँगा और मुझसे कुछ काम बनेगा, तभी मुझे खाना अच्छा लगेगा। यह मैं आपको डराने के लिए नहीं कह रहा हूँ और न यह कोई सत्याग्रह ही है। ऐसे सत्याग्रह पर मेरा विश्वास भी नहीं है।

अभी गरमी के दिन हैं। इस समय मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है। मेहनत के बिना अच्छा फल कहाँ मिलता है? इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप जरा डटकर काम कीजिये और गरीबों के लिए जो कुछ दे सकते हैं, वह दीजिये।

[सन्ध्याकालीन इस प्रार्थना-प्रवचन के बाद भूमि के दो दान-पत्र मिले तथा एक भाई ने ग्राम के काम के लिए ५०० रु० दिये। उन दान-पत्रों को विनोबाजी के हाथों में देते हुए कश्मीर के मुख्य मंत्री श्री बख्शी साहब ने कहा कि 'लीजिये, आपके लिए नाश्ता लाया हूँ'।—सं०]

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

गुजरूनगरोठा (कश्मीर) ३०-५-'५९

छोटे दिमागों की राजनीति को कुदरत की विशालता से पवित्र बनाना होगा

हमें यह मुल्क खूबसूरत मालूम हो रहा है। अभी कश्मीर में प्रवेश करना है। वहाँ की खूबसूरती तो और भी कमाल की होगी। कुदरत बहुत खूबसूरत है। कुदरत की बेहतरीन देन है—इन्सान। हम कुदरत के अनुसार काम करेंगे तो ठीक है और अगर उसके खिलाफ काम करेंगे तो वह हमें कभी माफ नहीं करेगी। कुदरत न किसी पर गुस्सा करती है और न किसी को माफ करती है। वह सब के साथ समान रूप से बर्ताव करती है। आप जैसा उसके साथ बर्ताव करेंगे, वैसा आपको फल मिलनेवाला है। आप बबूल का बीज बोयेंगे तो आपको बबूल ही मिलेगा। आम की गुठली बोयेंगे तो आम मिलनेवाला है। यह कुदरत का न्याय है। कुदरत के साथ कैसे बरतना है, यह इन्सान पर निर्भर करता है। सामने देखिये, कितने खूबसूरत पेड़ हैं, पहाड़ हैं, चश्मे हैं, पत्थर हैं, हवा है, सूरज की रोशनी है, आसमान है! ये सारी नियामतें कुदरत की तरफ से इन्सान को मिली हैं। उनका उपयोग करना आपकी बुद्धि पर निर्भर करता है।

झगड़ों का कारण : तंगदिली

इन्सान आपस-आपस में झगड़ता रहता है, इससे वह कुदरत की सेवा नहीं कर सकता। अगर इन्सान आपसी झगड़े मिटा दे तो विज्ञान से बहुत बड़ा लाभ मिल सकता है। जितनी तंगदिली होती है, उतने ही झगड़े होते हैं। तंगदिल होने से विज्ञान आपको कहाँ से कहाँ ले जायगा? उधर तो शुक्र और चन्द्र पर चलने की बात चल रही है और इधर छोटे-छोटे दिल हैं तो इससे कोई काम होनेवाला नहीं है। छोटे दिल होने से ऐसा बर्ताव होता है, जैसा कि जानवर करते हैं। जानवर का दिल बहुत छोटा होता है। जंगल का शेर सिर्फ अपनी भूख और प्यास की चिन्ता करता है। वह जिस तरह छोटे दायरे में सोचता है, उसी तरह हम भी सोचेंगे तो इस युग में हम कहीं के न रहेंगे।

अणुशक्ति के लिए वातावरण बनायें

विज्ञान ने कुदरत का राज खोल दिया है। वह इससे आगे तो और भी तरक्की करनेवाला है तथा अनेक राज खोलनेवाला है। पिछले दस वर्षों में विज्ञान ने जितनी प्रगति की, उससे हम कहाँ से कहाँ पहुँच गये? विज्ञान नये-नये शस्त्र ईजाद कर रहा है। एटम, हैड्रोजन आदि ऐसे-ऐसे बम बने हैं कि एक ही बम से सौ-दो सौ मील का मुल्क तबाह हो जाता है। ऐसे खौफनाक हथियारों से मनुष्य सज्ज है। इधर कुदरत की ताकत भी हाथ में आ गयी है, इसलिए अगर मनुष्य का दिमाग ठीक न रहा तो बहुत बड़ा खतरा है। अगर मनुष्य का दिमाग ठीक रहे और अणुशक्ति का सम्यक् उपयोग हो तो आज उत्पादन में बहुत वृद्धि हो सकती है। एक एकड़ में जितना उत्पन्न होता है, उससे दुगुना पैदा करना आज बहुत ही आसान है। उत्पादन की विशिष्ट क्षमता हमारे हाथ में है, बशर्ते कि हम अणुशक्ति का उचित उपयोग करना सीखें। हम आपस-आपस में झगड़ते रहें तो अणुशक्ति का उपयोग कैसे कर सकेंगे?

तेरे-मेरे का अभिशाप

हमारे सामने पानी का एक गम्भीर मसला है। पंजाब की नदी का पानी पाकिस्तान में जा सकता है और सिंध नदी का पानी राजस्थान में पहुँच सकता है। लेकिन हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के आपसी संघर्ष के कारण हम बिलकुल ही उलटा कर रहे हैं। हम पंजाब की नदियों का पानी हजारों मील दूर राजस्थान में ले रहे हैं, क्योंकि इस देश के टुकड़े हो गये हैं। यह हिस्सा हमारा है, यह तुम्हारा है—इस प्रकार के हमारे-तुम्हारे के भेदों ने कुदरत से मिलनेवाले सहज लाभ को खो दिया है।

महाराष्ट्र से नर्मदा नदी गुजरात में जाती है, गोदावरी आन्ध्र में जाती है और कृष्णा-कावेरी तमिलनाड़ में जाती है। उन नदियों का पानी यदि कोई एक सूबेवाला रोक ले तो दूसरे को तकलीफ होगी। इसलिए पानी का इन्तजाम करना है तो आपस-आपस में मिलकर करना चाहिए। छोटे दिल से समझौते का मार्ग नहीं निकल सकता। इस विज्ञान के युग में दिल बड़ा बनेगा, तभी आनन्द से रहेंगे और छोटा बनेगा तो खत्म हो जायेंगे।

समस्या को सुलझाने की सही दिशा

आज रास्ते में सर्वोदय-व्यवस्था के संबंध में चर्चा चली। उस समय हमने कहा कि सर्वोदय होने से किसी भी मुल्क का आदमी किसी भी मुल्क में कभी भी बिना रोक-टोक के आ-जा सकेगा। पहले कश्मीर में आने के लिए भी परमिट लेना पड़ता था। हमारे यहाँ आने से पहले ही कुछ ऐसी सूरत बन गयी कि परमिट-प्रथा खत्म कर दी गयी और भी दूसरी तरह की जितनी पाबंदियाँ थीं, वे भी हटा दी गयीं। अब पंजाब का आदमी कश्मीर में और कश्मीर का आदमी पंजाब में बिना रोक-टोक के आ-जा सकता है। इसी तरह संसार के कुल देशों में होना चाहिए। कुदरत ने जितनी ताकत दी है, वह दुनिया भर के सभी इन्सानों के लिए है। सभी इन्सानों को हिल-मिलकर उसका उपयोग करना चाहिए।

इस समय जापान में जमीन कम है, जनसंख्या ज्यादा है। इसलिए वहाँ यह सोचा जाता है कि जनसंख्या कैसे घटे? इधर रूस में जनसंख्या कम है और जमीन ज्यादा है, इसलिए वहाँ बच्चे ज्यादा पैदा करनेवालों को इनाम दिया जाता है। इस तरह अलग-अलग होकर देखने से समस्याएँ घटेंगी नहीं। मनुष्य-समाज एक है। सारे इन्सानों की समस्या एक है। इस तरह से करके जब सोचेंगे, तभी अब टिक सकेंगे।

अकबर के जमाने में इंग्लैंड का एक आदमी अकबर के दरबार में आया, तब बादशाह को मालूम हुआ कि इस तरह धरती पर इंग्लैंड नाम का एक देश भी है। लेकिन आज छोटा-सा बच्चा भी जानता है कि इंग्लैंड कहाँ है? रूस कहाँ है? चीन और जापान कहाँ हैं? जितना ज्ञान इस समय स्कूल के छोटे से बच्चे को होता है, उतना ज्ञान अकबर को भी नहीं था।

आज अखबार का पहला पन्ना खोलते ही दुनिया की खबरें पढ़ने को मिलती हैं। प्रान्त की खबरें तो अन्दर के पन्नों पर होती हैं। कहने का मतलब यह है कि इस जमाने में दुनिया छोटी हो

गयी है, ज्ञान बढ़ गया है, लेकिन तंगदिली बहुत है। इसी तंगदिली के कारण आज ये छोटे-छोटे झगड़े होते रहते हैं।

राजनीतिज्ञों की दयनीय हालत

किसान की कोशिश यह रहती है कि उसके पड़ोसी की थोड़ी जमीन उसके खेत में आये। पड़ोसी को गाफिल देखकर वह धीरे-धीरे अपने खेत की मेंड़ को खिसकाता जाता है। थोड़ी-सी जमीन बढ़ जाने के कारण १० सेर अनाज अधिक मिलता है और पड़ोसी का १० सेर अनाज घटता है। लेकिन राष्ट्र का क्या बढ़ने-वाला है? दायें जेब के पैसे बायें जेब में आ गये तो इसमें खुश होने की क्या बात है? बेवकूफ लोग समझते नहीं कि दायां जेब खाली हो गया। मूर्ख किसान पड़ोसी की एक-दो फीट जमीन हथियाकर खुश होता है। इसी तरह सभी बड़े-बड़े देशवाले भी करते हैं। चीन के नक्शे में हिन्दुस्तान का कुछ हिस्सा दिखाया जाता है। इसका मतलब ही यह है कि लोग उसे चीन का भूभाग समझें। इसे मूर्खता के अतिरिक्त क्या कहा जा सकता है?

अपने देश में भाषावार प्रान्त-रचना हो रही थी, तब भी ऐसा ही हुआ। 'आबू' को लेकर गुजरात और राजस्थान में तना-तनी चली। एक उस पर अपना हक जताता था और दूसरा अपना। आज के राजनेताओं की हालत भोले किसानों जैसी ही है।

सोचने की जिम्मेदारी किस पर?

आज हमारे देश की सारी बागडोर उन लोगों के हाथ में है, जिनका नजरिया तंग है। हमारी तरफ से सारी बातों का फैसला प्रधान मंत्री करें, ऐसा ही हम मानते हैं। यानी हमने अल्लामियाँ का चुनाव कर डाला। यह कैसी अजीब बात है? इसलिए मैं आप से कहना चाहता हूँ कि चंद लोगों पर ही सारा सोचने का भार मत लादिये। चंद लोग उतना अच्छा नहीं सोच सकते, जितना की जनता सोच सकती है। शहरवालों से देहातवालों का दिल बड़ा होता है। शहरवालों का दिल बड़ा हो भी कैसे सकता है? देहात में कितना खुला आसमान दिखायी पड़ता है और शहरों में सिर्फ मकान ही मकान एक ही मकान में पचासों कमरे हैं और पचासों कमरों में पचासों किसम के लोग। कोई एक-दूसरे को नहीं पहचानते। सभी को अपनी-अपनी चिन्ता है। कोई मकान की पाँचवीं मंजिल पर खड़ा है तो कोई नीचे सड़क पर से जा रहा है। ऊपरवाले को लगता है कि नीचेवाला मनुष्य चींटियों की भाँति रेंग रहा है। जहाँ ऐसे विचार हों, अनन्त उन्मुक्त आसमान के दर्शन न होते हों, वहाँ बड़ा दिल कैसे हो सकता है?

यहाँ एक कनाल में से भी आधा कनाल जमीन दान देने-वाला आदमी मिलता है। शहरों में मिलेगा ऐसा आदमी? यह अल्लाह की बदमाशी है कि वह छोटों का दिल बड़ा करता है और बड़ों का दिल छोटा। इसलिए हमें देश की सत्ता चंद लोगों के हाथों में नहीं सौंपनी चाहिए। गाँवों का कारोबार अपने हाथों में लेना चाहिए।

दिल और दिमाग की विशालता

ऊपर की सत्ता उन लोगों के हाथ में सौंपनी चाहिए, जिनका दिल और दिमाग बड़ा हो, जैसे गुरु नानक। गुरु नानक जैसे ज्ञानी लोग हाथ में लकड़ी लेकर गाय चराने की तरह से काम नहीं करते। वे सलाह देते हैं। वैसे लोगों की सलाह से सारे काम किये जा सकते हैं।

आज दुनिया में जितने झगड़े हैं, वे दिल और दिमाग की टक्कर के कारण हैं। पहले इन्सान का दिमाग छोटा था। वह ज्यादा सोचता भी नहीं था। आज इन्सान सोचता तो दूर की है, पर उसका दिल छोटा होता है। अब मनुष्य का दिल और दिमाग दोनों बड़े होने चाहिए।

जिन्दे गाँव का लक्षण

आज दोपहर में हम गाँव में गये। उस समय हमें एक छोटा-सा लड़का मिला। उससे हमने कहा कि इस गाँव में जो सबसे गरीब हो, हमें उसी के घर ले चलो। वह हमें एक घर में ले गया। उस घरवाले की स्थिति अत्यन्त दुःखमयी है। उसके पास पैसा नहीं है। उसे तीन लड़कियों की शादी करनी है। वह कर्ज-दार है। उसे कोई मदद नहीं करता है। अब हमारी समझ में नहीं आता कि गाँववाले उसे मदद क्यों नहीं करते? मेरे पाँव में फोड़ा हो तो मेरा हाथ फौरन उसकी मदद में जाता है। शरीर के किसी एक अवयव को दुःख हुआ तो सारे शरीर को दुःख होता है। यह चेतन शरीर का लक्षण है। ऐसा ही गाँव में होना चाहिए। गाँव में जो व्यक्ति दुःखी हो, उसकी मदद में सारे गाँववालों को दौड़ना चाहिए। यही जिन्दे गाँव का लक्षण है। उसे गाँववाले मदद करें तो वह बिचारा कर्जे से बरी हो सकता है।

न्यूयार्क के हाथ में कपास की नकेल

छोटा दिल होने के कारण आज जो हम पर बाहर से हमला हो रहा है, उसे हम रोक नहीं सकते। घड़ी, चश्मा आदि जो ये वस्तुएँ हैं, इन्हीं के जरिये बाहर से हमारी जिंदगी पर हमला हो रहा है। उसे हम टाल नहीं सकते हैं। इसलिए अलग-अलग मालकी रखेंगे तो तबाह हो जायेंगे। नागपुर में 'संत्रा-मार्केट' है। वहाँ व्यापारियों ने एक संघ बनाया है। वे एक भाव तय करते हैं और उसी भाव में गाँववालों को सन्त्रा बेचना पड़ता है, क्योंकि सन्त्रा ज्यादा दिन टिकता भी नहीं है। इसलिए बेचारे संत्रेवाले, जो दूर-दूर से संत्रा ले आते हैं, उनको नियत भाव में संत्रा बेचना ही पड़ता है। यही देखिये कि कपास का भाव न्यूयार्क के मार्केट में तय होता है। वहाँ से भाव-निर्धारण की सूचना आती है। यहाँ कपास कम हुई तो भाव ज्यादा होना चाहिए। लेकिन न्यूयार्क से जो भाव तय होगा, उसीमें बेचना पड़ेगा।

ऐसी सारी हालत है। इसमें हम मिल-जुलकर काम नहीं करेंगे और 'हमारा घर, हमारा घर' करते बैठेंगे तो ये गाँव कैसे टिकेंगे? इसका मुझे कोई उत्तर नही देता है। मैं आठ साल से घूम रहा हूँ। मेरे दिल में एक जलन है। मैं देश के गरीबों के लिए सोचता हूँ। हम अलग-अलग रहेंगे तो हमारी ताकत नहीं बनेगी।

जय जगत्, जय ग्रामदान

मान लीजिये कि कल हिन्दुस्तान की नहीं, पर दुनिया की करतूत से महायुद्ध हुआ और सारे भाव बढ़े तो इन गाँववालों को कौन बचायेगा? गाँव के गरीबों का क्या होगा? नौकरों का क्या होगा? इसलिए बहुत जरूरी है कि हम मिल-जुलकर रहें। गाँवों का परिवार बने। महायुद्ध में सरकार आपको नहीं बचा सकेगी।

आज सरकार ने अच्छा काम किया तो आप उसकी स्तुति करेंगे, बुरा काम किया तो निंदा करेंगे। इससे आपका नसीब

आपके हाथ में नहीं रहेगा। यह तब तक नहीं होगा, जब तक आप मिल-जुलकर काम नहीं करेंगे।

इसलिए एक ओर 'जय-ग्रामदान' और दूसरी ओर 'जय-जगत्' कहना होगा। कुल देशों को सोचना चाहिए कि हम एक देश नहीं हैं, सारी दुनिया एक है।

अब 'जय जम्मू','जय कश्मीर','जय पाकिस्तान','जय-जापान' आदि कहने से नहीं चलेगा। 'जय-जगत्' कहना होगा और यह आप के हाथ में है। आप को गाँवों का परिवार बनाना चाहिए। ऐसा आप करेंगे तो देशवालों को सोचना होगा कि हमें भी अब दूसरे देश के लिए सोचना चाहिए। जैसे एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के लिए सोचे, वैसे ही एक देश भी दूसरे देश के लिए सोचेगा। मेरे प्यारे भाइयो! गाँव बने परिवार और दुनिया बने एक देश। इसलिए हमारा मंत्र है—'जय ग्रामदान' और 'जय-जगत्'। आज तक पाँच मनुष्य का एक परिवार था। अब ५०० मनुष्य का परिवार बनेगा और हमारा देश कौन? तो "दुनिया"; यह जवाब मिलेगा। हम 'जपुजी' में पढ़ते हैं "आयी पंथी सकल जमाती, मन जीते जग जीते", इसमें बात यही है कि हमें दिल बड़ा बनाना होगा। दिमाग बड़ा बन चुका है। कुछ लोग हमें कहते हैं कि भूदान के काम से जमीन के टुकड़े हो रहे हैं। हम कहते हैं कि हम दिल को जोड़ने का काम करते हैं। इसलिए लोग मुझे आधा कनात जमीन देते हैं तो मुझे दुःख नहीं होता है। दिल एक हो जायेंगे तो अक्ल आ जायेगी।

सेवा-सेना में नाम दीजिये

मेरे प्यारे भाइयो! आप देख रहे हैं कि यहाँ लोग शांति-सेना में अपना नाम दे रहे हैं। मतलब यह कि लोग उठ खड़े हो रहे हैं। इतने दिनों में १५० से अधिक नाम हमारे पास आये हैं। आठ-नौ दिन में यह कैसा चमत्कार हुआ? हमारे साथी भी यह महसूस कर रहे हैं। कुछ लोगों को शंका थी कि इस पिछड़े हुए मुल्क में काम कैसे होगा? लेकिन यहाँ के लोग मानो इन्तजार में थे कि कोई शख्स आयेगा और जगायेगा। तपी हुई जमीन थी। वह पानी चूस रही है। आप ठीक सोच लीजिये। आप भी इस सेवा-सेना में नाम दीजिये। इसमें आपको हमारी तरफ से कुछ मिलनेवाला नहीं है। हमेशा गाँव की सेवा करनी है और कहीं दंगा-फसाद हुआ तो बीच में जाकर खड़ा होना है, मार खाना है। छाती पर मार झेलेंगे, सहन करेंगे, गुस्सा नहीं लायेंगे, तब आप शांति-सैनिक होंगे। दिल में करुणा भरी हो तो हम दंगे में शांति स्थापित कर सकते हैं। हमारे खड़े होते ही सामनेवाला आक्रमण करते-करते रुक जायेगा। यह सब तब हो सकेगा, जब हम गाँव की सेवा करते रहेंगे। फिर दंगेवाले की हिम्मत हमें मारने की नहीं होगी।

शान्ति-सैनिक नारद जैसे हों

नारद की कहानी आपको मालूम है? वाल्मीकि जब उस पर प्रहार करने गया, तब नारद शांत रहे। उसे आश्चर्य हुआ कि यह कैसा अजीब जानवर है, जो न भागता है और न उलटा हमला ही करता है। भगवान का नाम लेकर शांत खड़ा है! उसे देखकर वाल्मीकि का हृदय पिघला। नारद ने उसे पूछा, "तुम क्या करने जा रहे थे?" वाल्मीकि ने कहा, "मैं तुम्हें मार रहा था। यह मेरा धंधा है। मैं इस तरह मारकर लोगों को लूटता हूँ।" तब नारद ने उसे कहा, "तुम जो यह पाप कर रहे हो, उसमें हिस्सा लेने के लिए क्या तुम्हारी पत्नी राजी है?"। वाल्मीकि ने कहा, "मैं यह सारा परिवार के लिए ही कर रहा हूँ, वह राजी क्यों नहीं होगी?" नारद ने फिर से कहा, "परन्तु यह तुम उसे जाकर पूछो।" वाल्मीकि घर गया। उसने पत्नी से पूछा। पत्नी बोली, "जो कुछ तू लायेगा, वह पकाने का काम मेरा है। तू कमाकर लायेगा तो मैं पकाऊँगी और चोरी करके या डाका डाल के लायेगा तो वह भी पकाने का काम मेरा है। कमानेवाला तू है। पाप तेरा है, मेरा नहीं।" वाल्मीकि दुःखी होकर वापस नारद के पास आया और बदल गया। इस तरह मारनेवाला, डाका डालनेवाला वाल्मीकि भक्त बन गया। फिर उसने 'रामायण' जैसा महाकाव्य लिखा, जो आज तक हम पढ़ते हैं और उससे हमारे दिल को तसल्ली मिलती है। ऐसा महान ऋषि बना वह।

श्रद्धा या सन्देह?

हम रूह हैं, जिस्म नहीं। जिस्म तो जानेवाला है। शांति-सैनिकों में ऐसी श्रद्धा होनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि हिन्दुस्तान में रूहानी ताकत है तथा वह और बढ़ेगी। भगवान पर भरोसा होना चाहिए। मुझ पर कोई हमला करेगा तो मैं नहीं डरूँगा। उस हमले को मैं अपने बल से नहीं, भगवान के बल से सहन करूँगा और उसके बल से ही शांति-स्थापन करूँगा। जो उस पर भरोसा रखेगा, वह खड़ा होगा, जो अपनी अक्ल पर भरोसा करेगा, वह गिरेगा।

ज्ञानी गुरु की कहानी मशहूर है। उसका शिष्य कुछ काम के लिए जंगल से जा रहा था। रास्ते में जोर की बारिश आयी। शिष्य वापस लौट आया और गुरु से पूछने लगा कि जोर से बारिश आ रही है, रास्ते में नाले मिलेंगे, उन्हें कैसे पार कर सकूँगा? गुरु ने कहा "भगवान का नाम लेकर।" शिष्य को गुरु पर असीम श्रद्धा थी। उसने पानी पर चलते समय अत्यन्त श्रद्धा से गुरु के नाम का स्मरण किया और तर गया। बाद में यह खबर गुरु को मिली। गुरु खुश हो गया। दूसरे दिन गुरु भी जाने लगा। उसे लगा कि मेरे नाम से शिष्य तर गया तो मैं भी तर जाऊँगा। गुरु पानी के पास आया तो उसके मन में शंका उत्पन्न हुई कि क्या सचमुच मैं पानी पर से जा सकूँगा? शंका आयी और गुरु डूब गया। शिष्य बच गया, वह श्रद्धावान था!

यहाँ जो शांति-सैनिक बन रहे हैं, वे श्रद्धा से बन रहे हैं। भगवान के भरोसे शान्ति-सेना में अपना नाम दे रहे हैं। रामजी का काम बंदरों ने किया। उनमें श्रद्धा थी। वैसे ही शांति-सैनिक बनने चाहिए। जैसे बंदरों ने रामजी पर श्रद्धा रखी थी, वैसे ही शांति-सैनिकों को भगवान पर भरोसा रखना चाहिए। रोज प्रेमपूर्वक सेवा का काम करना, जो सबसे दुःखी हैं, उन्हें प्रथम मदद करना और मौके पर अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तैयार रहना, यही शान्ति-सैनिकों का काम है।

◆◆◆

जय ग्रामदान-जय जगत्

प्रार्थना-प्रवचन

पठानकोट पंजाब २१-५-'५९

पंजाब नामदेव की भाँति मुझे भी यश देकर बिदा करे

[विनोबाजी ने एक अप्रैल को पंजाब में प्रवेश किया था और २१ मई को यात्रा समाप्त की। इन इक्यावन दिनों में विनोबाजी ने मुख्य रूप से पंजाब के लोगों में एकता की भावना का प्रचार किया। सिखों के झगड़े और भाषा-विवाद को मिटाने के लिए वातावरण तैयार किया। दो सौ एकड़ भूदान प्राप्त हुआ और तीन ग्रामदान प्राप्त हुए। इस यात्रा की सारी रिपोर्ट पंजाब के मुख्य कार्यकर्ता लाला अचिंतराम ने प्रस्तुत की। उसके बाद विनोबाजी ने भाषण दिया, वह यहाँ दिया जा रहा है। —सं०]

अभी लालाजी ने जो बातें कहीं, उनमें से एक बात मेरे हृदय में छा गयी। उन्होंने अपनी वही इच्छा जाहिर की, जो नामदेव ने पंजाब में आकर की थी। यह बात सही है कि मैं अपने को हमेशा उन्हीं की संगति में पाता हूँ, जिन्होंने अपनी भक्ति से, ज्ञान से और शुद्ध भावना से भारत को बनाया। ऐसों के साथ जब मेरा नाम लिया जाता है तो मेरा हृदय पिघल जाता है। लेकिन बुद्ध, महावीर, शंकर, रामानुज, नामदेव, कबीर, तुलसी, ज्ञानदेव, तुकाराम, मीरा, नरसी मेहता ये ऐसे नाम हैं, जिनके उपकार के ऋण से भारत को मुक्ति मिलनेवाली नहीं है। भारत के ये बहुत बड़े नाम हैं, लेकिन इतिहास में इनके लिए दो-चार लकीरें होती हैं। इतिहास के पन्ने तो राजा-महाराजाओं के भले-बुरे कारनामों से भरे रहते हैं, जिनका जनता में कोई हिसाब ही नहीं है। ये ही ऐसे नाम हैं, जो जनता को पावन करते हैं, प्रेरणा देते हैं। ये मेरे मित्र, हमेशा के साथी और मार्गदर्शक भी हैं। मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि इनका आशीर्वाद मुझे हासिल हो चुका है। जहाँ सिकन्दर पंजाब को जीतने में नाकामयाब रहा, वहाँ नामदेव कामयाब हुए।

महापुरुषों का आशीर्वाद

एक भजन में हर चीज भगवान का ही रूप है, ऐसा वर्णन करते-करते आखिर में नामदेव कहते हैं—'जीव विट्ठल, आत्मा विट्ठल, परमात्मा विट्ठल विट्ठल। नाम विट्ठल, रूप विट्ठल पतित पावन नामा विट्ठल विट्ठल॥' जीव और आत्मा परमेश्वर-स्वरूप है। नाम और रूप भी परमेश्वर के ही रूप हैं और पतित पावन नामा याने नामदेव भी विट्ठलरूप है। याने पतितों को पावन करने की शक्ति जिसमें है, ऐसा नामदेव परमेश्वर का ही रूप है। अकसर भक्त अपने को पतित कहते हैं और भगवान को पतितपावन, लेकिन नामदेव में इतनी अद्‌भुत आत्मनिष्ठा थी कि उसने अपने को पतितपावन कहा। ऐसे नामदेव के साथ मेरे जैसे का नाम जोड़कर लालाजी ने कमाल कर दिया। इन सबका आशीर्वाद मुझे हासिल है, इसलिए पंजाब के हृदय को मैं जानता हूँ। मैं मानता हूँ कि मेरी चीज यहाँ अत्यन्त प्रिय होगी। वेद, उपनिषद्, गीता, गुरुवाणी आदि पंजाब की चीजें मेरे खून के बूँद-बूँद में हैं।

संतों का संदेश मानवता

मुझे यह कहने में खुशी हो रही है कि आज यहाँ मेरे प्यारे मुसलमान भाई मुझसे मिलने आये थे, तब उन्होंने मुझे कुरान-शरीफ की एक प्रति भेंट दी। मैंने उनसे कहा कि आपने मुझे सबसे कीमती चीज भेंट दी है। इस तरह सब समझते हैं कि यह शख्स मुसलमान भी है, सिख भी है, बौद्ध भी है, हिन्दू भी है। मैं मानता हूँ कि अगर वे इस तरह समझते हैं तो उनकी आपस में एकता होने में देर क्या है? यह तो समझने की बात है कि जो पैगाम हमें गुरु नानक ने दिया, वही महर्षियों का, पैगम्बर का पैगाम है। फिर भी हम आपस में लड़ते हैं। कुरान-शरीफ में कहा है कि 'उम्मतुम् वाहिद्'। तुम सब लोगों की एक जमात है। उसमें यह भी कहा गया है कि दुनिया में अनेक रसूल हो गये। हम उन रसूलों में कोई फर्क न कर सबके लिए समान आदर रखते हैं। यही हर काम का उसूल है। सब रसूलों ने हमें वही चीज सिखायी है। मानवता की बात, आपस में प्रेम करने की बात, एक-दूसरे के साथ सहयोग करने की बात, दुःखितों के लिए दया, करुणा रखने की बात और दूसरे समाज के लिए अपना सब कुछ समर्पण करने की बात—यही सब सन्तों ने सब प्रदेशों में कहा है।

भारत एक ऐसा प्रदेश है, जहाँ ऋषियों का, नदियों का और मनुष्यों का संगम हुआ है। इसीलिए कवि रविन्द्रनाथ ने कहा कि 'एई भारतेर महामानवेर सागर तीरे'। भारत भूमि सबका भरण करनेवाली सबके लिए मातृस्थान है। दुनिया भर के लोग यहाँ आये, उन सबका यहाँ स्वागत हुआ। इसी भूमि में हम पले हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये पाकिस्तान-हिन्दुस्तान के झगड़े भी मिट जायेंगे और पंजाब में जो झगड़े चल रहे हैं, वे भी मिट जायेंगे।

परमेश्वर का आशीर्वाद

मुझे आशा है कि जैसे नामदेव पंजाब में यश पाकर गये, वैसे ही आप मुझे भी यश देकर भेजेंगे। मैं कोई भी काम अपनी ओर से नहीं करता हूँ। 'मातु छोड़ी, पिता छोड़ा, छोड़ा सब कोई। अँसुवन जल सींच-सींच प्रेम बेल बोई'—यह चीज मुझको ठीक लागू होती है। २१ साल की उम्र में मैं घर छोड़कर निकला। मैंने उस वक्त मित्रों से भी सलाह नहीं पूछी। उस वक्त मेरे मन में एक श्रद्धा पड़ी थी कि भगवान मुझे प्रेरणा दे रहा है। जब भूदानयज्ञ शुरू हुआ, तब भी एक असाधारण घटना बनी। उस समय भी मैंने इसे परमेश्वर का काम मानकर उठा लिया और आज तक इस काम को कर रहा हूँ। लोगों को आश्चर्य होता है और मुझे भी होता है कि यह शरीर किस ताकत पर काम कर रहा है! इसमें कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर मुझे ताकत दे रहा है और ऐसी श्रद्धा से ही मैंने काम चलाया है। जहाँ भी मैं गया, वहाँ की जनता के हृदय में जो परमेश्वर है, उस पर संपूर्ण श्रद्धा रखकर मैंने काम चलाया। मुझे कभी शंका नहीं आयी कि यह जो काम मैंने उठाया है, वह सफल होगा या नहीं। वह सफल हो चुका है, हो रहा है और होगा। एक फिजा पैदा होती है तो वह मनुष्य के दिल को हिलाती है! फिर बच्चा-बच्चा प्रेरणा पाता है। गुरु नानक ने कहा है 'इक दूजी भो लख होई, लख होई लख बीस'। चाहे परमेश्वर का संदेश एक ही मुँह से निकला हो, परन्तु उसे लाख-लाख जबानें बोलना शुरू कर देती हैं। फिर उसकी २० लाख जबानें हो जाती हैं। नानक ने यह जो श्रद्धा बतायी, वह मुझ में है। पञ्जाब को आज तक बहुत सहना पड़ा है, इसलिए पंजाब में धीरज है और पंजाब के उस स्थल में परम शांति है। वह मैं यहाँ के भाइयों के, बहनों के, बच्चों के चेहरों में देखता हूँ। उनकी आँखों में मुझे दर्शन हो जाता है और देखते-देखते सब चेहरों का रूपान्तर परमेश्वर के चेहरे में हो जाता है। मुझे उन

चेहरों में सद्भाव दीखता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि मेरे हाथ में पूँजी आयी है।

गुरु ग्रन्थसाहब और सर्वोदय-साहित्य

यहाँ पर हमारे कार्यकर्ता सर्वोदय-साहित्य बेचते हैं। मैं कहता हूँ कि सर्वोदय-साहित्य तो गुरुवाणी है। कुल गुरु ग्रन्थ-साहब में मैंने ऐसी एक भी चीज नहीं देखी, जो कि सर्वोदय-विचार से भिन्न हो। मिलकर खाओ, बाँटो, नाम लो, किसी के साथ झगड़ा मत करो, 'मंने मगन चले पंथ, मंने धरम सेती सम्बन्ध', जिसका धर्म के साथ सीधा संबध है, वह किसी पंथ से ताल्लुक नहीं रखता है आदि सब बातें जो उसमें कही गयी हैं, वे कुल सर्वोदय-विचार हैं।

कल मैं कश्मीर जा रहा हूँ, वैसे दिन तो भगवान के सारे पवित्र ही होते हैं, परंतु कल का दिन बुद्ध भगवान का जन्म-दिन और ज्ञानप्राप्ति का दिन है। उस दिन हम कश्मीर में प्रवेश कर रहे हैं। मैं मानता हूँ कि हमारे काम के लिए यह शुभ शकुन है।

बुराई को अच्छाई में प्रगट कीजिए

हम गलत काम करते हैं और सही भी। आज ही एक बहन ने मुझ से कहा कि 'अमुक शख्स मुझे सहन नहीं होता है'—इस तरह की बातें हमें नहीं कहनी चाहिए। 'ना कोई बैरी, नाहीं बिगाना'। हममें ऐसी हिम्मत होनी चाहिए कि हम सब के हृदय में प्रवेश करें, दुश्मन को भी दोस्त बना लें और गुनाह करनेवाले के लिए भी अपने हृदय में सहानुभूति रखें, जिससे वह भी ऊँचा चढ़े और हम भी ऊपर बढ़ें। आप सब जिसमें बुराई हो, उसकी तरफ अत्यन्त सहानुभूति से देखो तो बुराई जायेगी और अच्छाई प्रकट होगी।

मैं कश्मीर जा रहा हूँ याने क्या करने जा रहा हूँ, यह मैं नहीं जानता हूँ। परन्तु मेरे मन में है कि मैं सेवा करने जा रहा हूँ। अगर भगवान मुझसे कुछ सेवा लेगा तो सेवा होगी। मैं आप सबका आशीर्वाद चाहता हूँ। 'क्वेकर' मित्रों ने हमसे कहा है कि आप जो मिशन लेकर कश्मीर जा रहे हैं, उसकी सफलता के लिए हम प्रार्थना करते हैं। मैंने कहा कि आप मुझे सबसे बड़ी मदद देते हैं। उसी तरह मैं आप से कहता हूँ कि आप भी मेरे लिए प्रार्थना करें। इसमें मेरा मिशन कुछ नहीं है, भगवान का मिशन है। आशा है कि आप सबकी कृपा से प्रभु मुझसे वहाँ कुछ न कुछ सेवा लेगा। अगर भगवान ने चाहा तो मैं फिर से पंजाब की सेवा के लिए उपस्थित हो जाऊँगा। ◆◆◆

प्रार्थना प्रवचन

मांडली (कश्मीर) २९-५'-५९

कामना और आसक्ति से की जानेवाली सेवा मन को पवित्र नहीं बनाती

हम देख रहे हैं कि यहाँ लोगों के मन में एक इन्किलाब आ रहा है। अकसर दुनिया में जो इन्किलाब की बात चलती है, वह तशद्दुद, हिंसा के साथ लाये जानेवाले इन्किलाब की चलती है। लेकिन हम अमन और प्रेम की ताकत से संसार में बदल करने की शांतिमय क्रांति की बात कर रहे हैं। यह बात यहाँ के लोगों को जँच रही है और शांति-सेना के लिए सैकडो नाम आ रहे हैं। यह एक नयी बात है। जम्मू और कश्मीर में आज तक ऐसी बात नहीं हुई है और न हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों में ही हुई है। इसलिए यहाँ जो नयी चीज पैदा हो रही है, वह एक शुभ चिह्न है। वह यह बता रहा है कि यहाँ का समाज टिकने-वाला समाज है। यहाँ का समाज प्राचीन काल से यहाँ बसा हुआ है। यहाँ के लोग हमें सुनाते हैं कि हम सोमवंश के हैं या ययाति के वंश के हैं। याने इतने कदीम जमाने से यहाँ सभ्यता चली आयी है। बीच के जमाने में यहाँ के लोग दबे हुए थे। लेकिन कोई जगानेवाला शख्स आया तो श्रद्धा के साथ जाग रहे हैं और अपने पास जो थोड़ा बहुत है, उसी में से एक हिस्सा अपने गरीब भाइयों के लिए दे रहे हैं।

शंकराचार्य के बाद

आज एक भाई ने हम से कहा कि शंकराचार्य के बाद आप ही यहाँ पैदल आ रहे हैं और एक मिशन लेकर, धर्म का काम लेकर आ रहे हैं। हम तो तवारीख नहीं जानते हैं और हिंदुस्तान की तवारीख लिखी हुई भी नहीं है। वैसे शंकराचार्य के बाद वहाँ कुछ लोग आये भी होंगे, लेकिन यहाँ के लोगों को सिर्फ शंकरा-चार्य याद हैं। उन्होंने धर्म का बहुत बड़ा काम किया। इसलिए १२०० साल के बाद भी लोग उनका नाम याद रखते हैं। यहाँ पर अमरनाथ की यात्रा के लिए कई यात्री पैदल आते हैं, परंतु वे पुण्य हासिल करने के लिए आते हैं, स्वर्ग में अपना स्थान पक्का बनाने के लिए आते हैं, अतः समाज के उत्थान का काम लेकर, एक मिशन लेकर पैदल आनेवाले शंकराचार्य को ही लोग याद करते हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मैं भी उन्हीं को याद करता हूँ। शंकराचार्य ने बिलकुल जवानी में ही पैदल यात्रा की ओर केरल से निकलकर कश्मीर पहुँचे। उन्होंने बिलकुल गिरे हुए, मायूस बने हुए समाज को, जिसकी श्रद्धा टूट रही थी, खडा किया और उसमें जजबा तथा हिम्मत पैदा की। मैं उन्हीं के कदम पर चलने की कोशिश कर रहा हूँ। मेरा यह काम परमेश्वर का है। काम ऐसा नहीं है कि मैं विद्वानों के, पंडितों के सामने एक तक-रीर करने से कामयाब हो जाऊँ। यह तो समाज की ताकत बढ़ाने का काम है, इसलिए सब लोग मिलकर करेंगे, तभी होगा। इसमें मुझे अपने बल से नहीं, बल्कि आप सबके बल से कामयाबी मिलनेवाली है।

हमने बहुत श्रद्धा से परमेश्वर का स्मरण करते-करते यहाँ प्रवेश किया है। हम मानते हैं कि परमेश्वर की ताकत हमारे पीछे है। वही ताकत आपको जगा रही है। बच्चे-बच्चे को वही प्रेरणा दे रही है। कल एक सात साल के बच्चे ने सभा में उठकर कहा कि मैं अपना नाम सेवा के लिए देना चाहता हूँ। यह कौन कह रहा है? परमेश्वर कह रहा है, उसी ने हमें घुमाया और वही आप में उत्साह पैदा कर रहा है।

हरिजनों के साथ

आज गाँव के कुछ हरिजन भाई हमसे मिलने आये थे। उनसे हमें काफी जानकारी हासिल हुई। यहाँ पर हरिजनों में मेग, बर-वाला, महाश, रटार, चमार, सरयारा और साही—ऐसे सात प्रकार हैं। उनके काम जूते बनाना, चमड़ा छीलना, नाना रूप बनाना, बुनकाम आदि हैं। उनमें भी ऊँच-नीच दर्जे होते हैं। सबसे ऊँचा दर्जा मेग का है और सबसे नीचा साही। वे एक-दूसरे के हाथ का नहीं खाते। उनमें एक दूसरे से शादी नहीं होती है। हरिजन शिकायत कर रहे थे कि उन्हें मन्दिर में नहीं जाने दिया जाता है और कूँए में पानी भरने नहीं दिया जाता है। अब आप लोगों को सोचना चाहिए कि अपने गाँव का मजबूत किला बनाना है

तो उन हरिजन भाइयों को अपने में शामिल किये बिना कैसे चलेगा ? कबीर बुनकर था और रैदास चमार। सब जातियों में महात्मा पैदा हुए हैं। इसलिए जाति का खयाल छोड़कर इन्सान पर इन्सान के जैसा प्यार करना चाहिए।

मंदिर सबका हो

पिछले साल ठीक इसी दिन–२९ मई को–हम अपने जातियों के और धर्मों के साथियों को लेकर पंढरपुर-मंदिर में गये थे। मंदिरवालों ने हमें पत्र लिखकर आमंत्रण दिया था। वहाँ पर मंदिर में सिर्फ दर्शन नहीं, बल्कि भगवान का आलिंगन किया जाता है। इसलिए मेरे साथ आयी हुई ईसाई, मुसलमान लड़कियों को भी भगवान का आलिंगन कराया गया। जैसे किसी ब्राह्मण को पूरा दर्शन हासिल होता है, वैसे उन सबको हुआ। इसे सबने पसंद किया। इतना बड़ा मंदिर सबके लिए खुला तो वहाँ के देवता भ्रष्ट नहीं हुए, आज भी वहाँ लाखों लोग जाते हैं। उसी तरह आप भी यहाँ के मंदिर में सबको आमंत्रण दो और कहो कि सब आओ, चोर, डाकू, खूनी, पापी, पुण्यवान सब आओ और अपने दोषों को छुड़ा लो। भगवान जो पतितों को पावन करनेवाला, गिरे हुए को उठानेवाला, डूबनेवाले को तैरानेवाला, जिनकी कोई पूछ नहीं है, उन्हें पूछनेवाला है। इसलिए जो उसका दर्शन चाहते हैं, उन सब के लिए मंदिर के दरवाजे खोल देने चाहिए। आप भूदान देने के साथ वह काम भी करते हैं तो गाँव में कितना प्रेम फैलेगा ! आप सब से यही कहिये कि मंदिर में आते समय साफ होकर आइये।

यहाँ हरिजन मुर्दा मांस या गाय का मांस नहीं खाते हैं। जम्मू और कश्मीर-राज्य में गाय की कत्ल की मनाही है। यहाँ के हरिजन बुनकाम, भंगीकाम, बाजा बजाने का काम आदि जो धंधे करते हैं, उनमें एक भी काम ऐसा नहीं है, जो बुरा हो। ये सारे जरूरी काम हैं। झूठ बोलना, दूसरे को तकलीफ देना, ये बुरे काम हैं। इसलिए इतने अच्छे काम करनेवालों की तरफ हम नफरत की निगाह से देखेंगे तो हम गिर जायेंगे। रामचन्द्र ने शबरी के बेर खाये थे और गुह को आलिंगन किया था। ऐसे सब पर प्यार करनेवाले भगवान की मूर्ति हम बनाते हैं और उसी मंदिर में हरिजनों को नहीं आने देते हैं तो ग लत करते हैं।

पार्टियों के लिए या सर्वोदय के लिए ?

यहाँ पर बहनें शान्ति-सेना के लिए बड़ी तादाद में नाम दे रही हैं। अकसर (हिंसा की) सेना में भाइयों के नाम आते हैं। लेकिन यह शांति-सेना है। उसमें सब पर प्रेम करने की, घर-घर जाकर सेवा करने की, अपना सब कुछ न्यौछावर करने की और प्रेम से दुनिया को जीतने की बात है, इसलिए इसमें बहनें पीछे नहीं रहेंगी, आगे ही आयेंगी।

अब हमारी कृष्णा बहन (श्रीमती कृष्णा मेहता, सदस्य लोकसभा) इस फिक्र में पड़ी है कि इतनी सारी बहनों के साथ कैसे संबंध रखा जाय। आपने नाम देकर कृष्णा बहन को प्रेम से बाँध लिया है। उनके जैसे लोग दूसरे अच्छे काम कर रहे हैं, लेकिन समाज को बनाने का यह जो काम है, इससे बढ़कर दूसरा कोई काम नहीं हो सकता है। हमारे जो भाई-बहन असेम्बली आदि में गये हैं, वह ठीक ही है। लेकिन हमें समझना चाहिए कि गरीबों के वास्ते काम करना जरूरी है। यह कभी न भूलना कि हम जनता में जाकर पार्टी की बात करेंगे तो जनता के हृदय के टुकड़े होंगे। इसलिए वहाँ तो ऐसी बात करनी चाहिए, जिससे सब का भला हो।

बिना चाह की सेवा

सर्वोदय में जाति, पंथ, धर्म, भाषा, पक्ष आदि कोई भेद नहीं हैं। इसमें इन्सान को इन्सान ही समझकर उसकी सेवा करनी है। हरएक के हृदय में जो अंतर्यामी भगवान बैठे हैं, उनकी सेवा करनी है। इस सेवा में सेवा करो और मेवा माँगो, ऐसी बात नहीं है। जो मेवे को मद्देनजर रखकर सेवा करेगा, वह सेवक नहीं, सौदागर होगा। हमें तो ऐसी सेवा करनी है, जिसमें हमारी कोई चाह नहीं है।

इसी जिन्दगी में हमें भगवान के दर्शन हों, इसीलिए हम सेवा करते हैं। जैसे माँ बच्चे की सेवा पूरे प्यार से और बिना कुछ मतलब के करती है, वैसी ही हमें भी करनी चाहिए। अगर मन में यह बात हो कि आज मैं खूब सेवा करूँगा तो ३ साल के बाद लोग मुझे वोट देंगे तो वह सेवा तो है, लेकिन मतलब की सेवा है। सेवा के बाद सीट मिलेगी तो फिर भगवान के दर्शन नहीं होंगे। भगवान कहेंगे कि तू जो चाहता था, वह तुझे मिल गया। तूने भरभर के पाया। याने भगवान के बहीखाते में हमारा नाम दर्ज नहीं होगा। लेकिन हम बिना किसी चाह के सेवा करें तो वह सेवा भगवान के बहीखाते में दर्ज होगी। फिर भगवान पर जिम्मेवारी आयेगी और वे हमें दर्शन देंगे।

हमारी तमन्ना

हम आठ साल से पैदल यात्रा कर रहे हैं। अब पता नहीं कि जम्मू-कश्मीर से वापस लौटेंगे या नहीं। अमरनाथ में मर गये तो अमर हो जायेंगे। इतनी मेहनत हम इसलिए करते हैं कि हमें उसी का दीदार चाहिए। इस काम से गरीबों को जमीन मिलेगी, लोगों में प्यार बढ़ेगा, समाज में फसल बढ़ेगी, सुख बढ़ेगा, लेकिन हमें हासिल यही करना है कि इस निमित्त से भगवान राजी हों, हमें उनका दर्शन हासिल हो। यह चोला छोड़ने के पहले उनका दर्शन हो, उनका मुखड़ा दीखे, इसके सिवाय हमारे दिल में और कोई तमन्ना नहीं है।

परमेश्वर के नाम से छोटा काम हो तो भी बड़ा फल मिलता है और उसका नाम न हो तो बड़ा काम करने पर भी छोटा फल मिलता है, याने इस जिन्दगी में फल मिलता है। मरने के बाद कुछ नहीं मिलता है। इस जिन्दगी का हिस्सा तो बहुत छोटा, ज्यादा से ज्यादा ७०-८० साल का है, लेकिन मरने के बाद का हिस्सा बहुत बड़ा है। इसलिए जो यहाँ कुछ पाना चाहता है, उसे यहाँ मिलेगा, फिर वहाँ कुछ नहीं मिलेगा। हम तो चाहते हैं कि यहाँ जितना मिले, लोगों को मिले, हमें कुछ भी न मिले।

यहाँ पर मैंने अब तक सर्वोदय-पात्र की बात नहीं कही थी। लेकिन अब कहता हूँ कि हर घर में सर्वोदय-पात्र रखिये। ♦♦♦

अनुक्रम

१. दरिद्रनारायण की उपासना ही मेरे जीवन का अन्तिम...
लखनपुर २२ मई '५९ पृष्ठ ४८५
२. छोटे दिमागों की राजनीति को कुदरत की विशालता...
गुजरूनगरोठा ३० मई '५९ ,, ४८७
३. पंजाब नामदेव की भाँति मुझे भी यश...
पठानकोट २१ मई '५९ ,, ४९०
४. कामना और आसक्ति से की जानेवाली सेवा....
मांडली २९ मई '५९ ,, ४९१

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।